वान थ्यूनेन

Von Thunen theory of Agricultural Location

/Monday

वान थ्यूनेन की कृषि अवस्थिति मॉडल (1826) व्याख्या करें, सीमाएँ (आलोचनात्मक परीक्षण) करें वर्तमान प्रासंगिकता बताएं (भारत के संदर्भ में, वैश्विक संदर्भ में)

Q - वान थ्यूनेन के कृषि अवस्थिति मॉडल की व्याख्या करें तथा उन सीमाओं को बताइए जिसके आधार पर इस सिद्धांत की आलोचना की जाती है।

Q - कृषि अवस्थिति की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए वान थ्यूनेन की कृषि अवस्थिति सम्बन्धी दशाओं की व्याख्या करें तथा यह स्पष्ट करें कि यह सिद्धांत किस प्रकार वर्तमान कृषि प्रतिरूपों के संदर्भ में प्रासंगिक बना हुआ है।

Q - वान थ्यूनेन की अवस्थिति मॉडल की आलोचनात्मक परीक्षण करें।

i - कृषि अवस्थिति मॉडल का उद्देश्य एवं कृषि अवस्थिति की अवधारणा

ii - वान थ्यूनेन का कृषि अवस्थिति मॉडल - परिचय, आधार, उद्देश्य

- वान थ्यूनेन के अवस्थिति मॉडल की मान्यताएं
- कृषि अवस्थिति प्रारूप (6 संकेन्द्रीय वलय प्रारूप)
- कृषि की 6 पेटियों का निर्धारण, बाजार के चारों ओर

a - दुग्ध, सब्जी फल पेटी

b - ईंधन की लकड़ी की पेटी

c - गहन कृषि पेटी

d - फसल चारा परती पेटी (3 खेत प्रणाली)

e - फसल चारा परती पेटी जहाँ फसल क्षेत्र कम है।

f - पशुपालन पेटी (Map)

iii - पेटियों का सीमांकन / निर्धारण - अधिकतम लाभ / तुलनात्मक लाभ के आधार पर सीमांकन किया

लाभ = विक्रय मूल्य - (परिवहन लागत + उत्पादन लागत)

P = V - (T + E)   Map

- सीमांकन विधि, ग्राफ / Diagram, लकड़ी का उदाहरण

iv - 6 पेटियों की व्याख्या

5 - संशोधन (वान थ्यूनेन द्वारा)

a - नौपरिवहन योग्य नदी

b - प्रतिस्पर्धी या बाजार केन्द्र

c - भूमि की उर्वरता में भिन्नता (Map)

मूल्यांकन → सकारात्मक पक्ष (मॉडल का प्रत्यक्ष महत्व

कमियाँ → मान्यता के आधार, व्याख्या की कमियाँ / मॉडल की कमियाँ

वर्तमान प्रासंगिकता → मॉडल की प्रासंगिकता (प्रत्यक्ष) नवीन संदर्भ में

निष्कर्ष →

अवस्थिति मॉडल - किसी भी कार्य के लिए उचित स्थान के चयन का आधार
↓
एक समस्या

कार्य - कारक विविध
↓
एक साथ नियोजित रूप से उपयोग करना और एक स्थान पर एकत्रित करना
↓
चुनौती

लेकिन सभी कारकों को एक साथ करना समस्या है

आधारभूत कारकों को महत्व दे

शेष कार्यों का निवेश करना

कृषि अवस्थिति से तात्पर्य - फसलों के लिए उचित कृषि भूमि का चयन
↓
तुलनात्मक तुलनात्मक लाभ

→ भूमि उर्वरता (उर्वर), सिंचाई, श्रम, परिवहन, बाजार, तकनीकि, पूंजी, विपणन, वित्तीय प्रबंधन / सरकारी नीतियां, सामाजिक संरचना, अधिवास, जलवायु

1826 - द० जर्मनी

तुलनात्मक लाभ पर

कृषि का आर्थिक विश्लेषण

- आर्थिक लगान, कृषि गहनता, कृषि प्रतिरूप

तकनीकि आदर्श

कृषि भूगोल

कृषको को लाभकारी कृषि

जागरूक

बाजार मूल्य /मॉग

फसल की कृषि

कृषि अवस्थिति मॉडल के अंतर्गत कृषि फसलों एवं कृषि कार्य के लिए उचित स्थान के चयन के आधारों को इस प्रकार स्पष्ट किया गया है ताकि कृषि लाभकारी हो सके और कृषको को अधिकतम लाभ की प्राप्ती हो।

इस संदर्भ में वान थ्यूनेन ने ~~कृषि सर्वप्रथम~~ सर्वप्रथम 1826 में कृषि अवस्थिति मॉडल प्रस्तुत किया जो मुख्यतः तुलनात्मक लाभ पर आधारित है। इन्होंने द० जर्मनी के कृषि प्रतिरूपो के अध्ययन के आधार पर कृषि कार्य का अवस्थिति विश्लेषण प्रस्तुत किया। इसमें यह माना गया कि कृषको को उन्ही फसलो को प्राथमिकता देनी चाहिए जिनसे तुलनात्मक लाभ की प्राप्ती अधिक हो। किसी भी कृषि भूमि पर विविध प्रकार के फसलो की खेती की जा सकती है लेकिन उन्ही फसलो की कृषि की

जाती चाहिए जिनको काफी आवश्यकता थी।

इस तरह वान थ्यूनेन ने कृषकों को लाभकारी कृषि के लिए प्रेरित किया एवं बाजार माँग या मूल्य के अनुसार फसलों की प्राथमिकता की सलाह दी। वान थ्यूनेन के मॉडल में कृषि का आर्थिक विश्लेषण पूर्णतः तकनीकि आधारित किया गया। इसमें आर्थिक लगान, कृषि गहनता, कृषि प्रतिरूप जैसी आर्थिक शब्दावलियों का प्रयोग और व्याख्या का प्रयास किया गया जो बाद के वर्षों में कृषि प्रणालि के विकास का प्रमुख आधार बना। यही कारण है कि 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ का यह मॉडल अपने उद्देश्यों के अनुरूप वर्तमान में भी प्रासंगिक बना हुआ है हालांकि बदलती हुई वैश्विक अर्थव्यवस्था एवं कृषि की प्रवृत्तियों के साथ इस सिद्धांत की सीमाएँ भी क्रमशः दृष्टिगत होती गयी लेकिन कृषि अवस्थिति मॉडल के रूप में यह वर्तमान में भी मान्यता रखता है।

वान थ्यूनेन का मॉडल निम्न मान्यताओं पर आधारित है-

एकांकी प्रदेश / वियुक्त प्रदेश
स्वतन्त्र / आत्मनिर्भर

(M) कृषि अवस्थिति के विश्लेषण के लिए एकांकी प्रदेश की स्थिति को स्वीकार किया जहाँ भौतिक भौगोलिक एवं सामाजिक आर्थिक समरूपता मिलती है। ऐसे समरूप प्रदेश में एक मात्र बाजार स्थित हो जो कृषि उत्पादों का क्रय विक्रय करती हो। परिवहन का साधन एक मात्र घोड़ा गाड़ी हो तथा दूरी व भार के अनुपात में परिवहन लागत में इकाई वृद्धि होती हो तथा कृषक

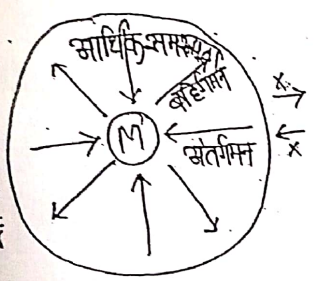

बाजार के माँग के अनुरूप फसलों में फेरबदल कर सकते हैं।

यदि उपरोक्त मान्यताएँ लागू होती हैं तब बाजार केन्द्र के चारों ओर कृषि प्रारूप सकेन्द्रीय वलयों में विकसित हो जायेगा और 6 संकेन्द्रिय वलय विभिन्न कृषि प्रतिरूप के अनुरूप विकसित होंगे।

i- दुग्ध, सब्जी, फल पेटी
ii- ईंधन की लकड़ी की पेटी
iii- गहन कृषि पेटी
iv- फसल, चारा, पशु पेटी
v- फसल, चारा, पशु पेटी जहाँ फसल क्षेत्र कम
vi- पशुचारण पेटी

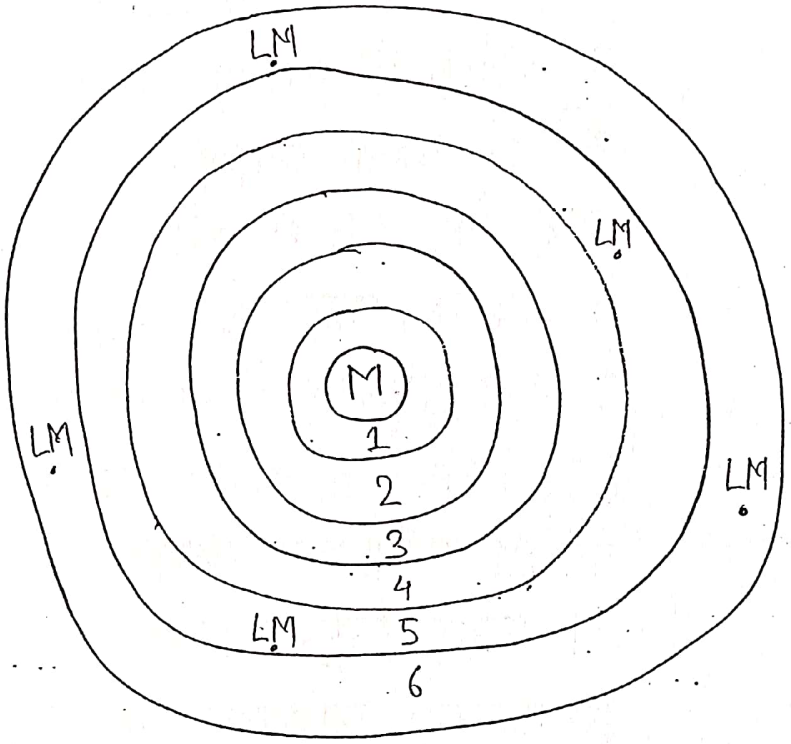

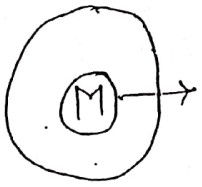

कृषि गहनता में कमी
आर्थिक लाभ में कमी

इन 6 कृषि पेटियों में फसल प्रतिरूप, कृषि गहनता तथा उत्पादित फसलों से होने वाले लाभ में भिन्नता पायी जाती है और बाजार से दूर जाते हुए कृषि गहनता एवं आर्थिक लाभ में क्रमशः कमी आती है।

Scanned with CamScanner

→ V.T. ने संकेन्द्रिय कृषि पेटियों का सीमांकन का कार्य किया और इसके लिए फसलों के तुलनात्मक लाभ को आधार बनाया। उन्होंने एक सूत्र का प्रयोग किया जो बाजार मूल्य, परिवहन लागत और उत्पादन लागत के अनुपात पर आधारित है।

$$\text{लाभ} = \text{विक्रय मूल्य} - \left(\text{परिवहन लागत} + \frac{\text{उत्पादन}}{\text{लागत}}\right)$$

$$P = V - (T + E)$$

इस मॉडल के अनुसार किसी भी पेटी का निर्धारण करने के लिए 2 प्रमुख फसलों के लाभ का अध्ययन कर उस फसल को प्राथमिकता दिया जाना चाहिए जिससे लाभ की प्राप्ती दूसरे फसल से अधिक हो लेकिन बाजार से दूरी बढ़ने के साथ जैसे ही पहली फसल से लाभ की तुलना में दूसरी फसल से लाभ में वृद्धि हो सके तब पहली फसल की कृषि बंद कर देनी चाहिए और दूसरे फसल की कृषि प्रारम्भ किया जाना चाहिए इसी क्रम में दूसरे फसल का तीसरे फसल की तुलना कर इसी पेटी का सीमांकन किया जाता है क्रमशः यह क्रम अपनाते हुए अन्य फसलों के लाभ का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए अन्य कृषि पेटियाँ निर्धारित की जानी चाहिए।

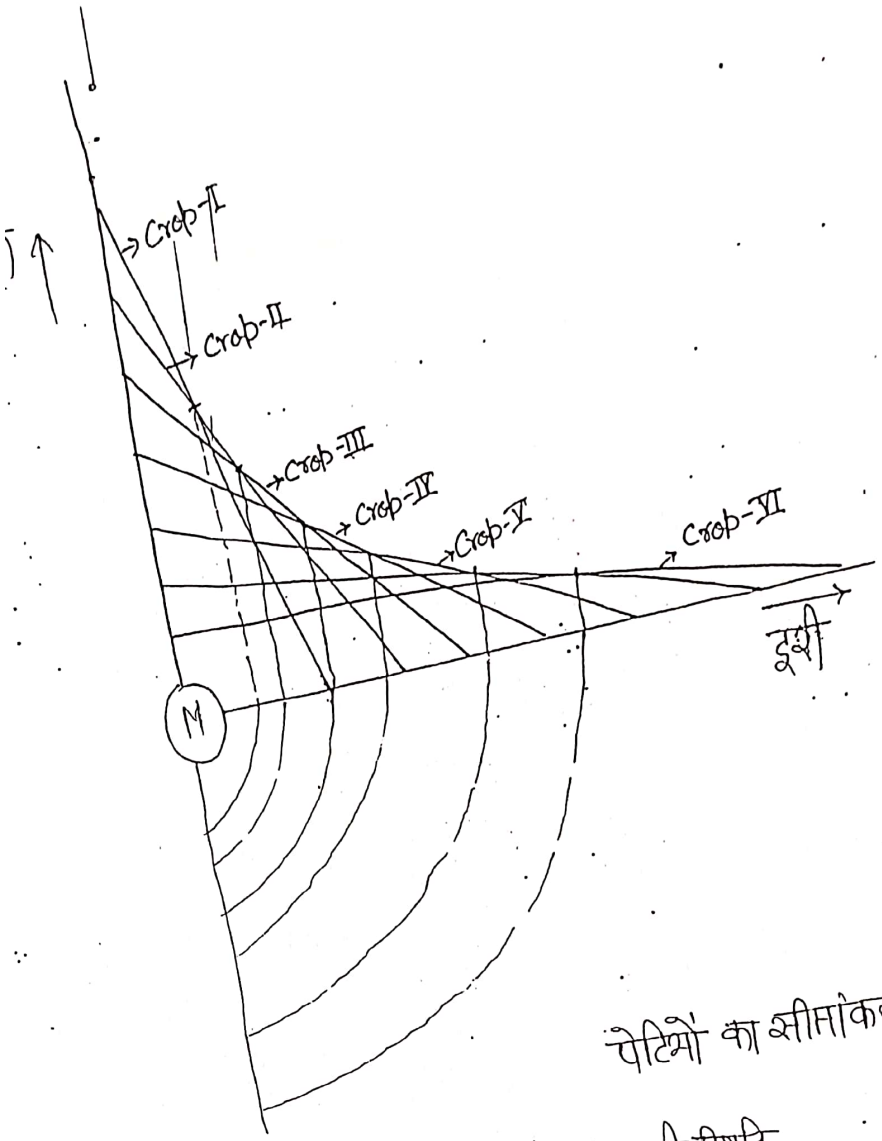

पेटियों का सीमांकन प्रक्रिया

लकड़ी की कृषि की दूरी एवं लाभ की स्थिति

इकाई दूरी	विक्रय मूल्य	उत्पादन लागत	परिवहन लागत	लाभ(P)=I-(II)	
.5	200	140	10	50	क्रमशः लाभ में कमी
1.0	"	"	20	40	
1.5	"	"	30	30	
2.0	"	"	40	20	
2.5	"	"	50	10	
3.0	"	"	60	0 (लगानशून्यपट्टी)	
3.5	"	"	70	-10	क्रमशः हानि में वृद्धि
4.0	"	"	80	-20	
4.5	"	"	90	-30	
5.0	"	"	100	-40	

Scanned with CamScanner

VT ने पेटियों के सीमांकन की व्याख्या के क्रम में लकड़ी की कृषि का उदाहरण दिया। जिसे उपरोक्त सारणी से समझा जा सकता है। सारणी से स्पष्ट होता है कि दूरी बढ़ने के साथ परिवहनलागत में वृद्धि के कारण लाभ में कमी आती है और 3 इकाई की दूरी पर लाभ शून्य हो जाता है ऐसी दूरी व भूमि जहाँ कृषि उत्पादों से लाभ शून्य हो जाए उसे लगान शून्य भूमि कहा। VT के अनुसार किसी भी फसल की कृषि अधिकतम शून्य लाभ तक किया जा सकता है इसके बाद ऋणात्मक लाभ के कारण उस फसल की कृषि बंद कर दी जानी चाहिए।

क्योंकि लगान शून्य भूमि के पूर्व भी पर भी कृषि उस सीमा तक किया जाना चाहिए जहाँ अन्य फसलों की तुलना में लाभ अधिक प्राप्त हो।

इस तरह VT ने विक्रय मूल्य, उत्पादन लागत, परिवहन लागत तथा कृषि उत्पादों के स्वरस्वाव एवं उपयोग के स्तर एवं आवश्यकता के अनुरूप कृषि पेटियों के सीमांकन का कार्य किया।

उपरोक्त आधारों पर ही VT ने बाजार केन्द्र के चारों ओर 6 कृषि पेटियों की स्थिति का निर्धारण किया और इसे वलयाकार स्वरूप में स्वीकार किया इन पेटियों की विशेषताएं एवं फसल प्रतिरूप की व्याख्या भी उपरोक्त आधारों पर किया।

Scanned with CamScanner

कृषि पेटियों की विशेषताएं

प्रथम कृषि पेटी में दुग्ध कृषि, सब्जी एवं फल कृषि का निर्धारण किया चूँकि ये दैनिक प्रयोग की वस्तु है और ताजा उपयोग किया जाना चाहिए इस आधार पर बाजार के करीब पहली पेटी में इनकी कृषि की जाती है। इसके अतिरिक्त यदि अधिक दूरी पर इनकी कृषि की जाय तो खराब होने की संभावना रहेगी जिससे लाभ में कमी आ जायेगी।

दूसरी पेटी में ईंधन की लकड़ी की कृषि की जायेगी चूँकि यह भी दैनिक आवश्यकता की वस्तु है और अधिक भार के कारण अधिक दूरी में कृषि करने से परिवहन मूल्य में वृद्धि के कारण ईंधन की कीमत में अधिक वृद्धि हो जायेगी जो आर्थिक संकट उत्पन्न कर सकता है।

तीसरी पेटी में उपेक्षाकृत भूमि की अधिकता और आवश्यकता के अनुरूप गहन कृषि की जायेगी चूँकि यहां जनसंख्या का दबाव अधिक होता है अतः अन्न सघन खाद्यान्न फसल की कृषि की जायेगी हलांकि यह भी दैनिक आवश्यकता की वस्तु है लेकिन इसे अधिक दिनों तक संरक्षित, सुरक्षित रखा जा सकता है।

चौथी पेटी में खाद्यान्न फसलों के अतिरिक्त व्यापारिक फसल की कृषि की जायेगी जबकि कुछ भूमि परती रह जायेगी। यहाँ जनसंख्या की तुलना में भूमि की उपलब्धता अधिक होती है अतः यहाँ विस्तृत कृषि की जायेगी। इसे 3 क्षेत्र प्रणाली कहा।

चौथी पेटी के आगे कृषि भूमि में क्रमशः विस्तार होती जाती है जिससे कृषि प्रतिरूप में महत्वपूर्ण बदलाव होता है। पाँचवी पेटी में की फसलों की कृषि की जाती है लेकिन चारागाह एवं परती भूमि में वृद्धि होती है इसके आगे छठी पेटी में चारागाह की उपलब्धता के कारण पशुचारण का कार्य होता है।

पाँचवी एवं छठी पेटी में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप छोटे बाजार केन्द्र भी विकसित हो जाते हैं। इस तरह विभिन्न पेटियों की कृषि गहनता एवं कृषि प्रतिरूप में पर्याप्त भिन्नता मिलती है प्रथम एवं छठी पेटी दोनों में पशुपालन का कार्य होता है लेकिन प्रथम पेटी में यह अवसायिक स्तर पर बाजार आधारित डेयरी उद्योग के रूप में विकसित होते हैं जबकि छठी पेटी में इसका स्वरूप जीवन निर्वाह स्तर का होता है।

Scanned with CamScanner